रज़िया शबनम

कहते है आज़ादी मुफ्त में नहीं मिलती। ऐसा ही कुछ हुआ रज़िया शबनम के साथ जब उन्होंने औरतों के खिलाफ समाज में फ़ैली दक्यानूसी सोच की दीवार बॉक्सिंग से गिराया। रज़िया शबनम अंतरराष्ट्रीय बॉक्सिंग रेफरी और जज बनने वाली पहली हिन्दोस्तानी महिला है।

रज़िया शबनम को हर कदम पर संघर्ष करना पड़ा क्योंकि औरतों का बॉक्सिंग करना आम बात नहीं है। उनका पिता का सहयोग होने के बावजूद, पडोसी उनपर टीका करते, कहते की उनका बॉक्सिंग करना मज़हब के खिलाफ था। उनके पिता की तरह, उनके पति ने भी उनका साथ दिया। उन्हें औरत होने के नाते, मुसलमान होने के नाते, और मुसलमान औरत होने के नाते समाज के दबाव का सामना करना पड़ा।

उनके इस संघर्ष की वजह से आज, किडरपोर स्कूल ऑफ फिजिकल कल्चर जहां शबनम ने 1998 के पिता से अपनी मुक्केबाजी की कक्षाएं लेनी शुरू की, ज्यादातर गरीब परिवारों से, अब अपनी बेटियों को एक छात्र के रूप में लेने के लिए कोच से अनुरोध करते हैं।